शैख़ुल हदीस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अशरफ़ अली साहब रह0

हकीमुल मिल्लत अमीरे शरीयत शैख़ुल हदीस मौलाना मुफ़्ती अशरत अली सऊद बाक़वी क़ासमी रह0 की थी आप सच्चे सेवक व संरक्षक थे।

नाम व वंश:

मुफ़्ती हाफ़िज़ मुहम्मद अशरफ़ अली इब्न अबु सऊद अहमद इब्न मुहम्मद इब्राहिम इब्न मुहम्मद लब्बे साहब। हकीमुल मिल्लत की उपाधि और उपनाम अशरफ़ था आपके वंशज अरबी जाति से थे जो अरब से स्थान्तरण होकर दक्षिण भारत में आबाद हो गये थे। आप के परदादा हज़रत मौलाना हाफ़िज मुहम्मद इबाहिम साहब हज़रत अल्लामा सैय्यद शाह अब्दुल लतीफ़ क़ादरी जिन्हें कुतुबे वैल्लौर के नाम से जाना जाता है।

सन् 1817 ई0 को अपने पीर एवं अनुशरणकर्त्ता के सुझाव पर अपने वतन ''मील पालम'' को छोड़कर शहर वेल्लुर से पन्द्रह किलो मीटर पर स्थित ''विरिनजी पुरम'' में आ गये थे।

दादीयाल:

आप के दादा हज़रत मौलाना हाफ़िज़ सुफ़ी अब्दुल सत्तार साहब उम्मुल मदारिस मदरसा बक़ियातुस सालेहात वेल्लुर के संस्थापक हज़रत अल्लामा शाह अुब्दल वहाब क़ादरी रह0 (ख़लीफ़ा हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह0) के विशेष छात्रों और आस्थावानों में से थे। इस लिए अब्दुल सत्तार साहब ने अपने बडे बेटे (हज़रत मौलाना अबु सऊद अहमद साहब को स्वयं हाफ़िज़े कुरआन पूरा करवाने के बाद मदरसा बाक़ियातुस सालेहात में प्रवेश करवाया। जहां आपके बडे बेटे ने अलिमियत की शिक्षा पूरी करने के बाद फतवा लिखने का अभ्यास भी किया।

नानीहाल:

विरिनजी पूरम से लगभग दस किलो मीटर की दुरी (वैनी वगलौर N.H-48) पर स्थिति पलीकुंदाह नामक गाँव है वहीं आपकी नानीहाल था। आपके नाना हज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद

ज़ियाउद्दीन अमाई रह0 विभिन्न ज्ञान की कलाओं पर अत्याधिक विशेषता प्राप्त थी विशेषकर साहित्य इतिहास एवं मीकात पर अच्छी पकड़ थी। आप के नाना महोदय ने एक लम्बी अवधि तक मदरसा बाक़ियातुस सालेहात वेल्लुर में शैक्षिक सेवाएं भी प्रदान की हैं।

जन्म और प्रारंभिक शिक्षा:

आपका जन्म 18 मुहर्रमुल हराम सन 1359 हिजरी बामुताबिक 26 फ़रवरी सन् 1940 ई0 दिन सोमवार को एक विद्वान और साहित्यक परिवार में हुआ था, आपका परिवार पढ़ा लिखा होने के कारण से आपने कम आयु में ही बहुत सी प्रार्थनाए, शिष्टाचार, कुरआन की सूरतें एवं आचरण सीख लिया था उस ज़माने में आपके पिता मदरसा इस्लामिया हाई स्कूल मील व शारम में अपनी सेवां दे रहे थे, आपके माननीय पिता जी नये मुसलमानों के प्रशिक्षण और राहत के लिए स्थापित ''अंजुमन तब्लीगुल इस्लाम'' के अन्तर्गत एक संस्था ''मदरसा मदीनतुल इल्म'' की शुरूआत आप ही के हाथों सम्पन्न हुआ था। इसी मदरसे में आपने अपने चचा हज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद इब्राहिम साहब रह0 से पवित्र कुरआन फ़िफ़्ज़ किया।

आलिमियत व फ़ज़ीलत:

पवित्र कुरआन हिफ़्ज़ करने के पश्चात आलिमियत की शिक्षा के लिए आपके मान्यवर पिता जी ने सन् 1953 ई0 में आपको मदरसा बाक़ियातुस सालेहात वेल्लुर में प्रवेश दिलाया। जहां आपने फारसी और अरबी और विभिन्न प्रकार के ज्ञान पर आधारित पुस्तकों की शिक्षा लगन और कठिन परिश्रम के साथ हासिल की। सन् 1961 ई0 में आपने फ़ज़ीलत की परिक्षा उत्रीर्ण की। इस समय के प्रसिद्ध धार्मिक विद्वान एवं मुफ़्ती मौलाना शैख़ु आदम साहब रह0, शैख़ुल हदीस मौलाना हसन बाशा साहब रह0, मौलाना मुफ़्ती पटेल अब्दुल वहाब साहब रह0, मौलाना रईसुल इस्लाम साहब रह0, कुरआन के विद्वान मौलाना अब्दुल जब्बार साहब और मौलाना जाफ़र हुसैन साहब इत्यादि आपके गुरूओं में से हैं।

नाना साहब रह0 के निर्देशन में पुस्तक का प्रकाशन:

मदरसा बाक़ियातु सालेहात से शिक्षा प्राप्त के पश्चात आप अपने नाना जो उस समय के प्रसिद्ध धार्मिक विद्वान थे। और मदरसा मंबाउल अनवारुल पीठ के संस्थापक थे। हज़रत मौलाना ज़ियाउद्दीन अहमद अमानी रह0 के साथ रह कर तर्क शास्त्र, आन्तरिक्ष विज्ञान (आकाश ज्ञान), जेहते क़िब्ला जैसी विद्याओं में निरन्तर लगे रहे और क्षेत्र में सराहनीय काम किया। अपने नाना की किताबों के प्रकाशन में मसलन मवाक़ितुस सलावात की प्रसिद्ध किताब उमदतुल अदिल्ला को संकलित करके परिपूर्ण किया। स्पष्ट रहे कि यह किताब दक्षिण भारत के समस्त ही बडे मदरसों के पाठयक्रम का हिस्सा है। इसी

तरह नबी (स0) के जीवन पर किताब ''गुलशने सीरत'' और ''ज़जरुल उमम फी तरजुमातिल कुरान फी लुगातिल अजम'' प्रकाशन एवं प्रसार के लिए भी पूरे उत्साह से काम किया।

हदीस कालः

उर्दू कहावत है कि ''इल्म का जोया कभी सेर नहीं होता'' के उद्देश्य और अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए दारुल उलूम देवबन्द की यात्रा की। हदीस विभाग में प्रवेश लिया। परीक्षा में 100 अंक प्राप्त करके अपने उस्ताद (गुरू) हज़रत मौलाना फ़ख़रुद्दीन अहमद साहब रह0 से विशेष दुआएं प्राप्त कीं।

इफ़्ता का अध्ययनः

दूसरे वर्ष आपने इफ़्ता में दाखिला लिया इफ़्ता के साल दारुल उलूम के धर्म विद्वान मुफ़्ती हज़रत मौलाना मेहंदी हसन साहब रह0 की विशेष स्नेह और संरक्षण प्राप्त था इस क्षेत्र में आपने जिन गुरूओं से लाभ उठाया अनमें अल्लामा मौलाना मुहम्मद इब्राहिम बलयावी रह0, हज़रत मौलाना फ़ख़रुद्दीन हसन साहब रह0, हज़रत मौलाना फ़ख़रुद्दीन अहमद साहब रह0 मुख्यरूप से सराहनीय हैं। हज़रत मौलाना क़ादिर मुहम्मद तैय्यब साहब रह0 को आपसे बचपन ही से स्नेह था आपसे बहुत ही गहरा हार्दिक सम्बन्ध एवं लगाव था।

शैक्षिक सेवाएंः

आप देवबन्द में हदीस अवधि और इफ़्ता की शिक्षा पूरी करके अपने घर बंगलौर लौट आये। और अपने वालिद के आदेश से आपने सन 1964 ई0 में दारुल उलूम सबीलुर्रशाद में अध्यापक के पद पर काम किया। आपने दारुल उलूम सबीलुर्रशाद में प्रारंभिक शिक्षा से लेकर माध्यमिक कक्षा तक की समस्त किताबें विशेषकर हदीस बुख़ारी की दोनों जिल्दें पढ़ाई।

पढ़ना पढ़ाने का उत्तरदायित्व एवं शैक्षिण कार्य जीवन के अन्तिम दिनों तक आपके सौभाग्य में रही। आपके पढ़ाने का ढ़ंग बहुत ही सरल एवं नरम था, ऐसा पढ़ाते थे कि छात्रों के सीनों में अंकित हो जाता था आप वाक्यों और मनः स्थिति को खोलकर समझाते। व्यर्थ बातों और बहसों में दूर रहते हमेशा सहनशीलता एवं सज्जनता के साक्ष पढ़ाया करते थे।

पुस्तकों से रुचिः

आपको समस्त विद्याओं व कलाओं में विशेषज्ञता प्राप्त थी, शिक्षा एवं शिक्षा से सम्बंधित पुस्तकों से गहरा सम्बंबध था जो भी पुस्तक महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ अनुभव होती, ख़रीद लेते, देश में जहां कहीं ''किताब मेला'' लगता, लम्बी यात्रा करके स्वयं पुस्तक मेले में जाते किताबों का चुनाव स्वयं करके

ख़रीद लाते। भाषा और अभिव्यक्ति की एक विशेष शैली थी आपके कलम का अपना चरित्र और वैभव लेखन ठोस और मजबूत था आपको गद्य और पद दोनों में समान शक्ति प्राप्त थी। दारुल उलूम सबीलुर्रशाद का प्रवक्ता ''सल सबील'' आपके सम्पादकीय में प्रकाशित होता था। उर्दू, फ़ारसी और अरबी कई पुस्तकों का संकलन किया, जो आपके निजी संस्थान ''अल मुशाहफ बंगलौर'' द्वारा आवश्यकतानुसार प्रकाशित की गई।

उर्दू, फ़ारसी, अरबी और तामिल चारों भाषाओं में स्वच्छ सरल मधूर एवं स्पष्ट शब्दों में अपनी रस घोलती भाषा से वक्तव्य देते थे। आप धर्म के समस्त विभागों के प्रत्येक काम को पसन्द फरमाते। हर उपयोगी कार्य को स्वीकृति देना और प्रोत्साहित करना आपका पसंदीदा कार्य था।

मदरसे की व्यवस्था:

आपके वालिद (पिता) के निधन के पश्चान दारुल उलूम सबीलुर्रशाद की मजलिसे शूरा के सभी सदस्यों की सहमति से आपको संरक्षक निवार्चित किया गया। इस वास्तविकता से सभी परिचित हैं कि आपके संरक्षक काल में दारुल उलूम सबीलुर्रशाद शैक्षिक, रचनात्मक, अध्यात्मक और हर तरह से लगातार विकास की ओर अग्रसर रहा।

इमारते शरीया कर्नाटक के लिए सेवाएं:

इमारते शरीया के लिए आपके पिता (बड़े हज़रत) के निधन के बाद पूरे देश के विद्वानों और वुद्धिजीवियों कर्नाटक के सभी सम्प्रदायों और सम्प्रदायों के विद्वान और बुजुर्गों की उपस्थिति में एक विशेष प्रतिनिधि सभा आयोजित की गयी थी जिसमें इमारते शरीया क्या है? अमीरे शरीयत के क्या कर्त्तव्य हैं? इस अवसर पर बोलते हुए हज़रत मौलाना क़ाज़ी मुजाहिदुल इस्लाम क़ासमी साहब रह0 ने अपने उपयोगी और प्रभावपूर्ण भाषण के बाद कहा कि मेरी राय में मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अशरफ़ अली साहब की ''अमीरे शरीयत'' चुनना उचित होगा। उस समय आल इंडिया मुस्लिम प्रर्सनल ला बोर्ड के एक महान सदस्य, लोक सभा सांसद हाजी इब्राहीम सुलेमान सेठ साहब रह0 ने अल्लामा इक़बाल के शेर और अपने भावनात्मक शब्दों में क़ाज़ी मुजाहिदुल इस्लाम साहब रह0 के राय का भरपूर समर्थन किया। उपस्थिति लोगों के सर्वसहमति से मुफ़्ती मुहम्मद अशरफ अली साहब को अमीरे शरीयत कर्नाटक निर्वाचित कर लिया गया। आपने आजीवन अपनी खुदा दाद दी हुई योग्यताओं से संस्थान की महान सेवा करके अपने आपको सर्मपित कर दिया।

धामिर्क विचार और सेवाएं:

भारतीय मुसलमानों की कई महत्वपूर्ण संगठनों और संस्थानों में आपने अति महत्वपूर्ण पदों पर

कार्य किया और जिम्मेदारियों को बहुत ही प्रेमपूर्वक और कुशलता के साथ पूरा किया। कई अन्य महत्वपूर्ण मामलों में निस्वार्थ भाव से सेवा की।

पद:

संरक्षक और शैखुल हदीस	दारुल उलूम सबीलुर्रशाद, बंगलौर
अमीरे शरीयत सानी	कर्नाटक प्रदेश
बुनियादी सदस्य	आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड
उपाध्यक्ष	इस्लामिक फ़िक़्ह एकेडमी
उप सभापति	आल इंडिया मिल्ली काउंसिल
सदस्य मजलिसे शूरा	दारुल उलूम नदवतुल उलूम लखनऊ, दारुल उलूम वक़्फ़ देवबन्द
	मदरसा मआदिनुल उलूम वानिम बाड़ी
	जामिया अनवारुल उलूम नीरची
	मदरसा तालिमुद्दीन निलोर
	दारुल उलूम सईदीया गडयातम
	मदरसा सऊदिया नमकूर
अध्यक्ष	राब्ता अदबे इस्लामी, कर्नाटक
नाज़िर	मदरसा दऊदिया, इरोड
प्रबन्धक	मदरसा मंमबउल हसनात मील व शारम
अध्यक्ष एवं संरक्षक	दारुल उलूम सिद्दीक़िया मैसूर
अध्यक्ष	मदरसा निसवान इशाअते इस्लामी चेन्नई
	मदरसा अशरफुल उलूम मैसूर
	मदरसा तहफ़ीजुल कुरआन विलनजपूर
	अल जामियातुल अज़हर तन्डी
	मदरसा सऊदिया, चिन्ता मनी पट्टी

हालांकि आप दीनी शिक्षा और धार्मिक ज्ञान पर गहरी नज़र रखने वाले दूरदर्शी न्यायप्रिय और समाज में परस्पर एक सी राय रखने वाले धारक थे।

आपने अपना समस्त जीवन दीन व मिल्लत की सुरक्षा, विस्तार एवं विकास में व्यतीत कर दिया।

निधन:

अल्लाह ने आपको अच्छा स्वास्थ्य दिया था अन्तिम दिनों में सांस लेने में कुछ परेशानी हो गयी

थी। आप दिनांक 16 जिलहिज्ज 1438 हिजरी बा मुताबिक 8 सितम्बर 2017 ई0 जुमा 2:30 बजे ईश्वर को प्रिय हो गये। दारुल उलूम सबीलुर्रशद की मजलिसे शूरा और परिवारिक व्यक्तियों और कुछ विशेष मित्रों की वजह से तदफीन के काम में विलम्ब से हुआ चुनांचे दिनां 17 जिलहिज्जा 1438 हिजरी बामुताबिक 9 सितम्बर सन 2017 ई0 दिन शनिवार सुबह 10 बजे सबीलुर्रशाद के अहाते में नमाजे जनाजा हुई और तदफीन मस्जिद सबीलुर्रशाद से क़रीब पश्चिम दिशा में आपके वालिद साहब के निकट में हुई।

आपके परिवार में चार बेटे (मौलाना) हाफ़िज़ अहमद रशादी साहब, हाफ़िज़ मुफ़्ती अहमद माज़ साहब, मौलाना हाफ़िज़ मुफ़्ती अहमद सुमाल साहब, हाफ़िज़ मुहम्मद औफ़ साहब के अलावा दो पुत्रियां हैं।

☆☆☆